ॐ सत्नाम साक्षी

प्रस्तुत चित्र कथा सत्गुरू महाराज जी के जीवन के कुछ प्रसंगों का चित्रण करती है। कहानियों, कथाओं, वार्ताओं का मन के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ता है साधारण वार्त्तालाप से जो बातें अच्छी तरह से बुद्धिगम्य नहीं हो पाती कथाओं, दृष्टान्तों, कहानियों द्वारा उन्हें अच्छी तरह समझा जा सकता है परन्तु चित्रों का विशेषकर बालकों के मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बालमन चित्रों के माध्यम से शिक्षाओं को सरलता से आत्मसात कर लेता है।

सत्गुरू महाराज जी के जीवन का प्रत्येक प्रसंग शिक्षाप्रद है। जन्म के समय से ही अनन्त अलौकिक लीलाएं उनके जीवन में देखने को मिलती हैं। उनमें से जीवन के कुछ प्रसंगों की झलकें प्रस्तुत पुस्तक में दी गई हैं।

आशा है पाठकगण इस पुस्तक से प्रभु प्रेम के पथ पर चलने की प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

प्रेम प्रकाश मण्डल

अमरापुर स्थान, जयपुर

ॐ सत्नाम साक्षी

पवित्र सिन्धु नदी के तट पर सुरम्य उद्यानों एवं सुहावने मैदानों के मध्य खण्डू नामक एक छोटा सा गांव।

उस गांव में रहने वाले दादा आसनदास का परिवार। दादा आसनदास जी स्वयं सत्संगी एवं सच्चे सन्तसेवी थे।

वैसे ही संस्कार उनके सुपुत्र श्री चेलाराम जी के मन में भी रचे बसे थे। खण्डू गांव में जो भी सैलानी सन्त महापुरूष या अतिथि

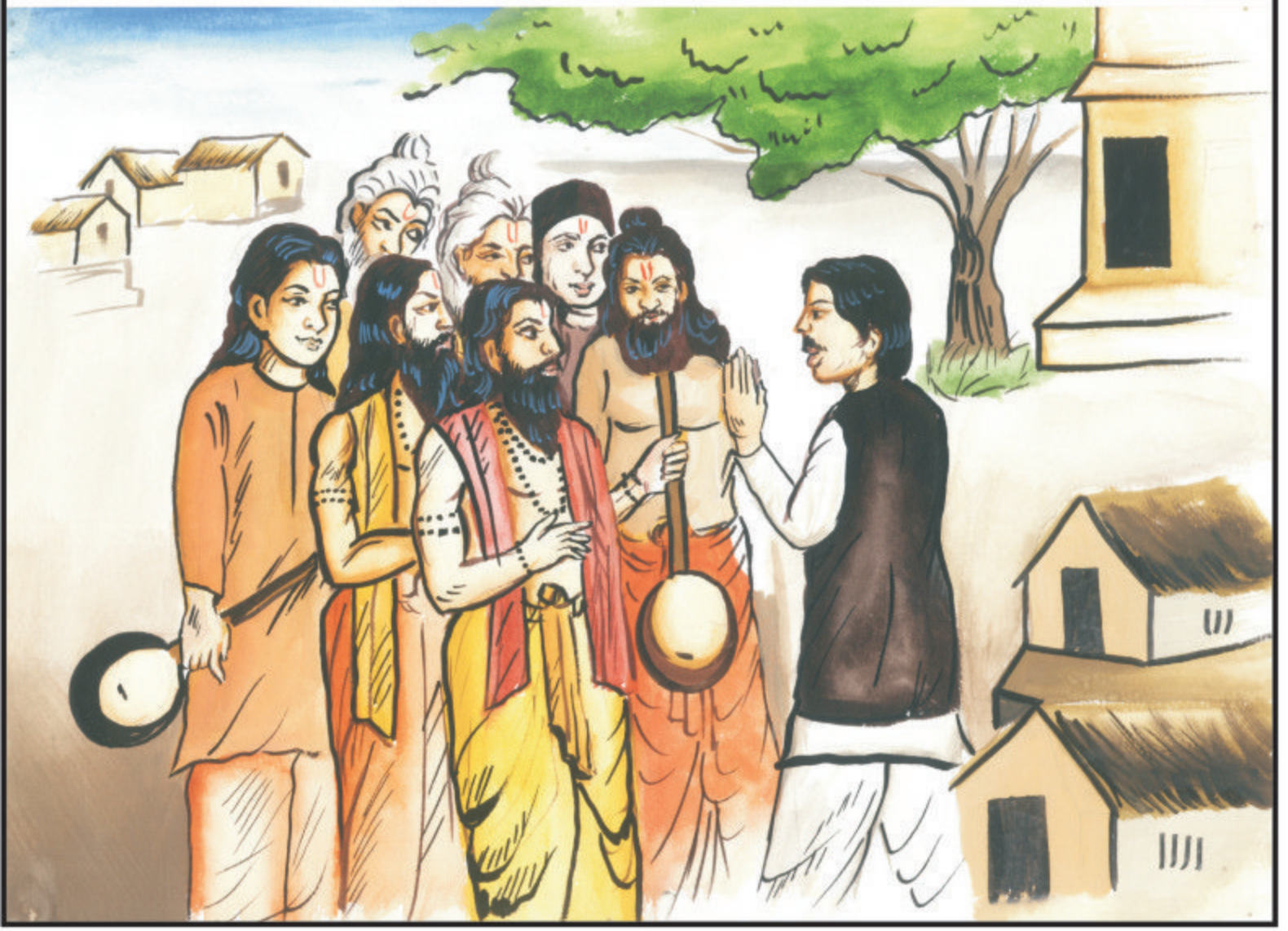

आते थे दादा चेलाराम जी उनको सादर प्रार्थना कर अपने घर लिवा जाते थे। भोजनादि द्वारा उनका सत्कार एवं सेवा करते थे।

एक बार ऋषिकेश से एक सन्त मण्डली सिन्ध देश का भ्रमण करते खण्डू गांव पधारी—भक्त चेलाराम जी सन्त मण्डली को प्रार्थना कर भोजन हेतु अपने घर में ले आए।

वे महापुरूष सत्संग कीर्तन करते थे। अतः श्री चेलाराम जी के घर पर सन्तगण सत्संग कीर्तन में मग्न हो गए।

माता कृष्णा देवी भी आनन्द मग्न होकर सत्संग में बैठी हुई थी। उन महापुरूषों को प्रेम में इतना निमग्न देखकर परिपूर्ण परमात्मा से प्रार्थना करने लगी कि इन सत्पुरूषों जैसे योगी महात्मा मेरे घर में पुत्र रुप में अवतरित हों। सत्संग के बाद महापुरुषों को बड़ी श्रद्धा व प्रेम भावना के साथ भोजन प्रसाद श्री चेलाराम दम्पत्ति द्वारा खिलाया गया।

तत्पश्चात् माता कृष्णा देवी सन्तों को प्रार्थना कर कहने लगी कि हे भगवन् मेरी ओर से प्रभु परमात्मा से ऐसी प्रार्थना करें कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो। सत्पुरूषों ने परमात्मा से प्रार्थना की।

माता कृष्णा देवी ने पतिदेव से आज्ञा लेकर चालीस दिन का व्रत प्रारम्भ किया— सारे दिन में केवल एक बार अल्प फलाहार और सारा समय परमात्मा के ध्यान में व्यतीत करती थीं।

ज्यों ही व्रत के चालीस दिन समाप्त हुए रात्रि को भगवान शिव ने माता को स्वप्न में कहा – हे कल्याणी! मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूं और तुम्हारा संकल्प शीघ्र पूर्ण होगा।

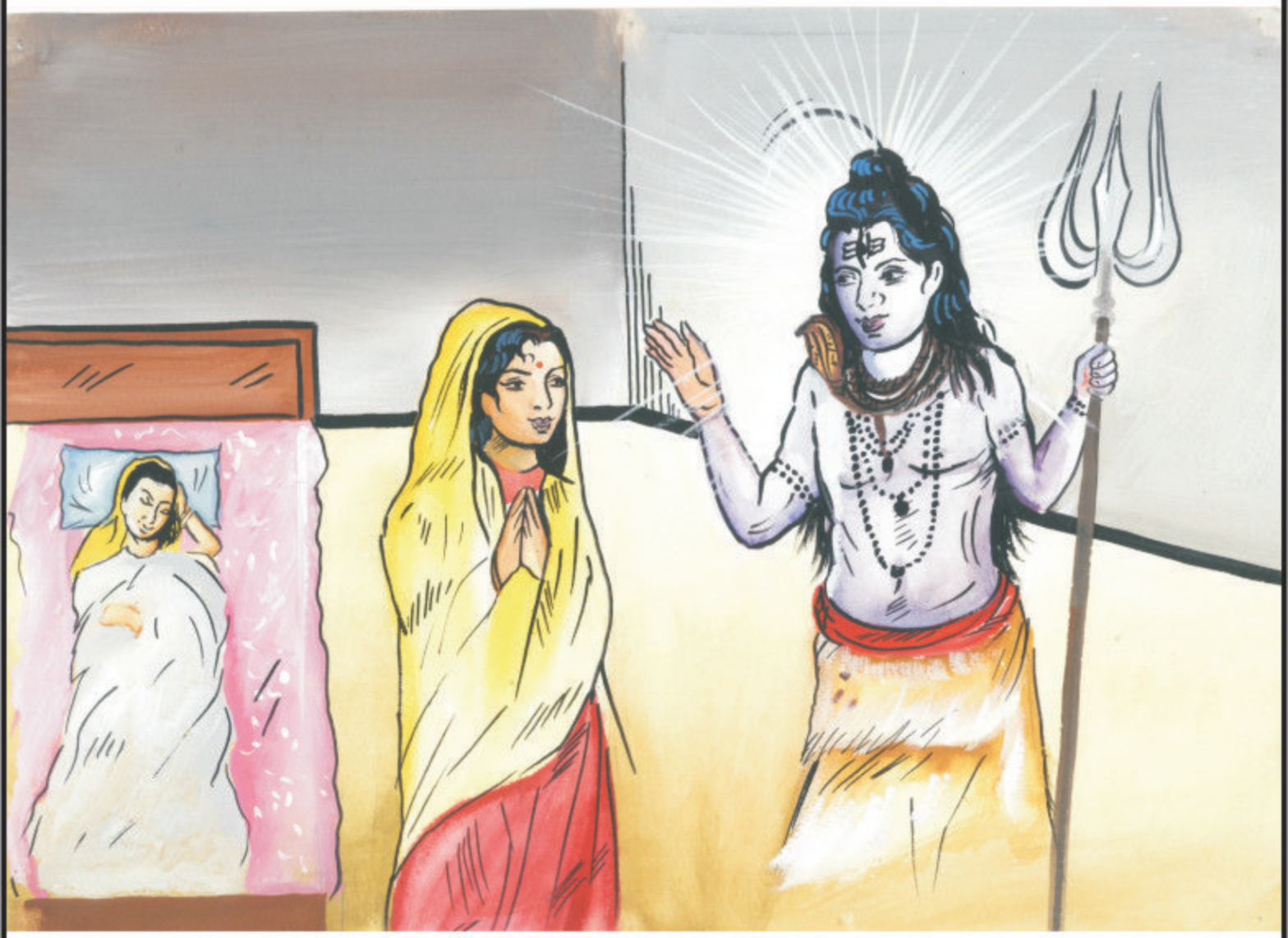

इक्तालीसवें दिन प्रातः 7 बजे व्रत की समाप्ति की। कुछ समय पश्चात् सत्गुरू टेऊँराम जी ने उनकी गोद भरी। माता का चेहरा देदीप्यमान हो उठा। चारों ओर शीतल मंद सुगन्धित पवन चलने लगी।

विक्रम सम्वत् 1944 सिन्धी आषाढ़ शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि

(6 जुलाई सन् 1887)

शनिवार

प्रातः 5 बजे

सत्गुरू टेऊँराम जी

महाराज का

जन्म हुआ।

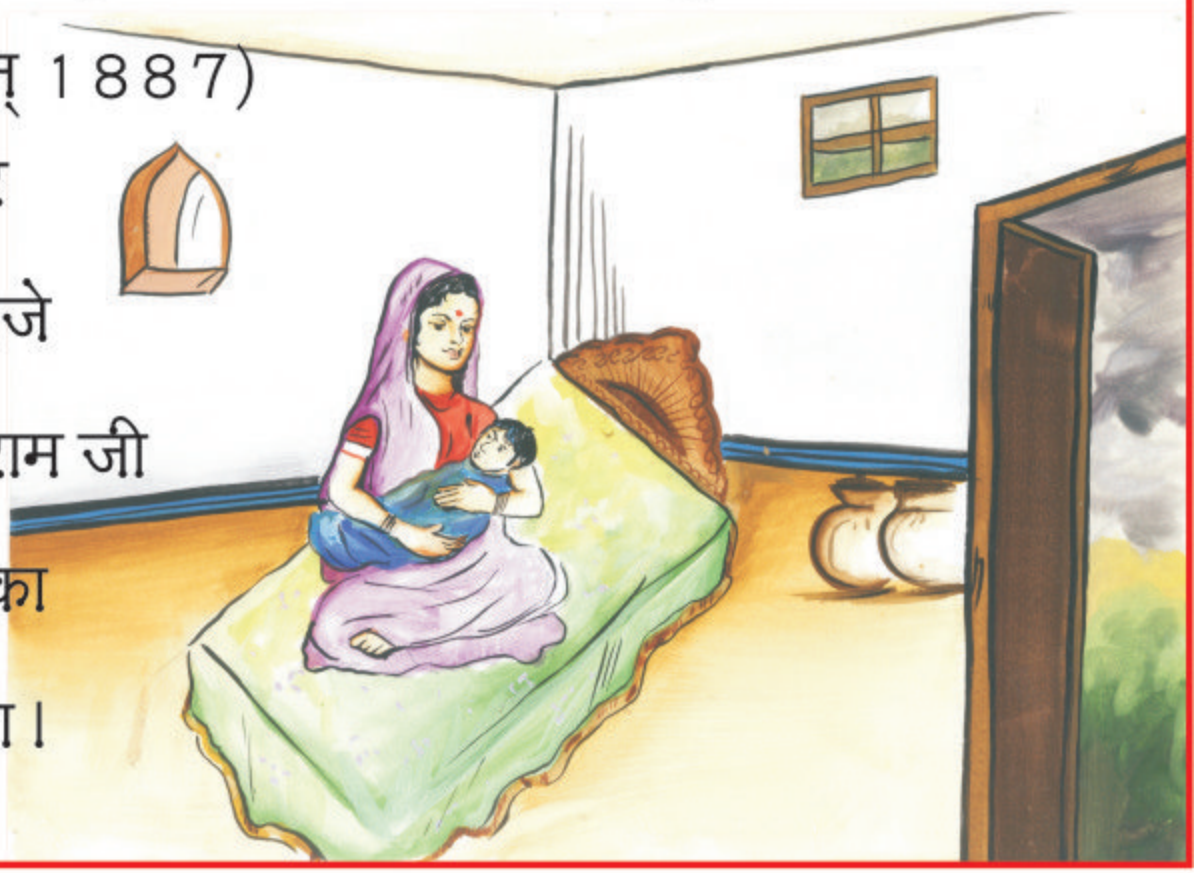

छठी के दिन पंडित जयराम जी ने बालक को देखकर भविष्यवाणी की कि बच्चा होनहार होगा तथा अवतार के रुप में कहलाएगा और बालक का नाम ''टेऊँराम'' रखा।

बालक टेऊँराम जी सूर्य के समान तेजस्वी थे उनका सौम्य व हंसमुख चेहरा देखकर सभी प्रसन्न होते थे माता कृष्णा उनको गोद में लेकर शिवोऽहम् की मीठी लोरी गाकर उनको सुलाती थीं प्रातःकाल चार बजे उठकर माता चक्की (जन्डु) चलाती थीं एवं

बालक को गोद में लेकर कबीरदास जी का भजन ''लागी लागी शब्द की चोट तन में'' गाती थीं।

थोड़ी अवस्था बड़ी होने पर बालकों को इकट्ठा करके आसन कर ध्यान करना सिखाने लगे।

8 – 9 वर्ष की आयु होने पर एक दिन सब बच्चों के साथ सिन्धु नदी पर नहाने गए। पहले सब बच्चे स्नान करने के लिए नदी में उतरे और स्वामीजी बाहर खड़े रहे और वस्त्रों की सम्भाल करने लगें।

एक खिल्लू नामक बच्चा चंचल स्वभाव का था वह नहाते हुए गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा – यह देखकर सब बच्चे बाहर आकर चिल्लाने लगे।

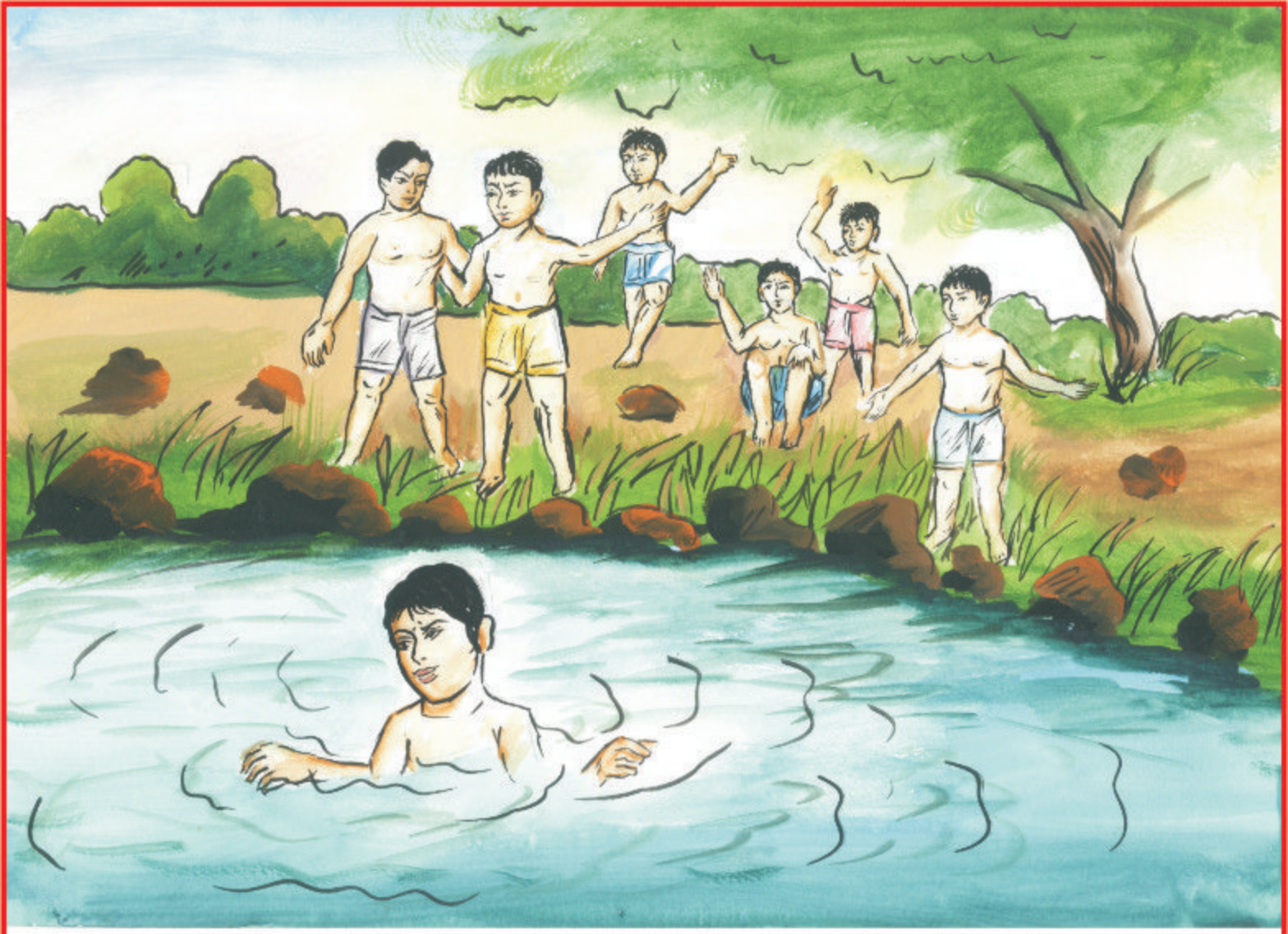

दूर बैठे स्वामी जी आवाज सुनकर वहां पहुंचे और बच्चों के सारा वृतांत बताने पर वस्त्र सहित जल में कूद पड़े।

यह देखकर बच्चे और रोने लगे — आवाज सुनकर गांव वाले भी आ पहुंचे — थोड़ी देर में स्वामी जी खिल्लू को साथ लिए बाहर निकले।

खिल्लू ने सबके पूछने पर बताया जब मैं डूबने लगा तो एक देवता ने मुझे गोद में बिठा लिया — स्वामी जी के आने पर उस देवता

ने उठकर उनका स्वागत किया

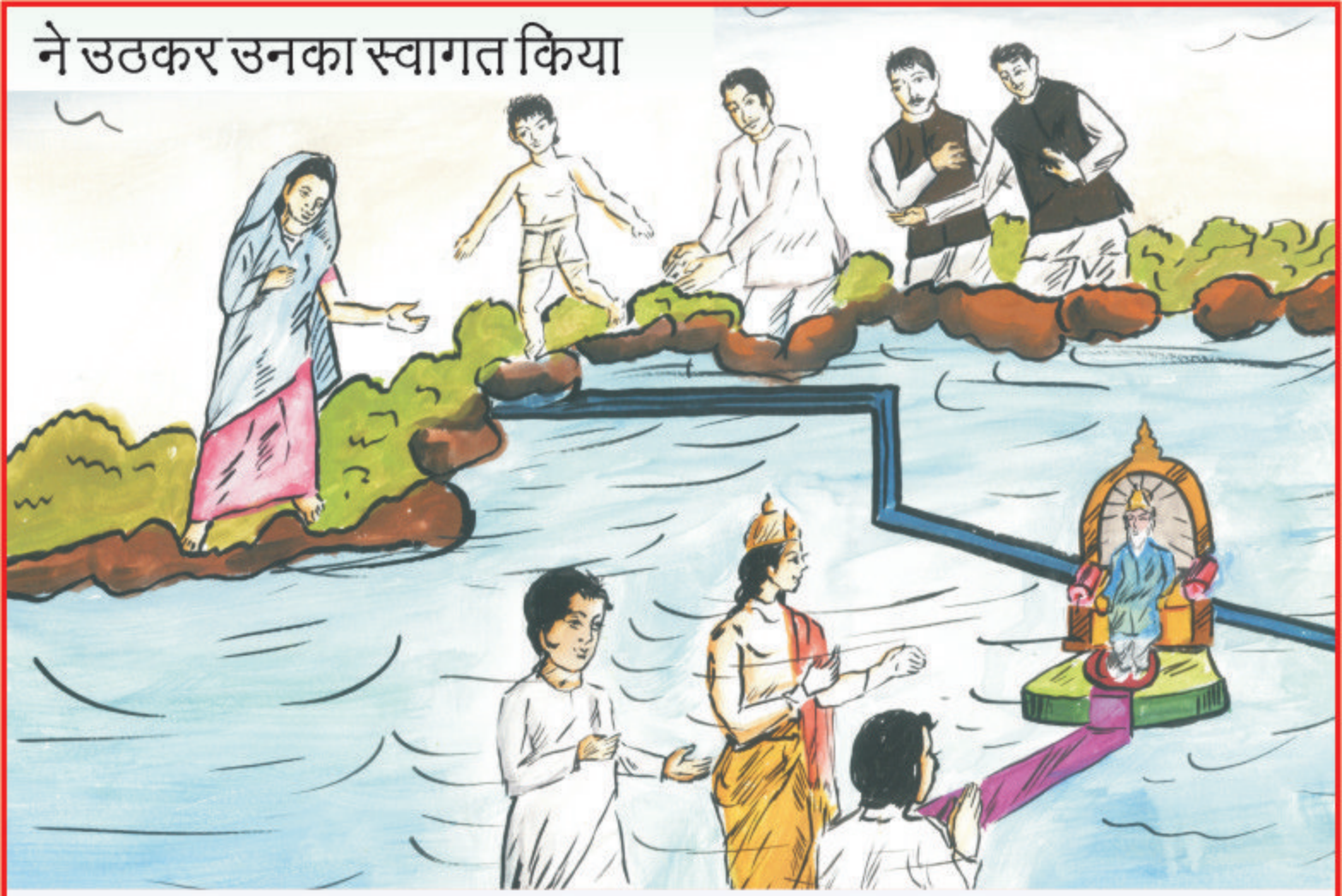

दोनों आपस में प्रेम से मिले फिर देवता अन्तर्धान हो गए एवं

स्वामी जी मुझे लेकर बाहर आए – सबके पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि वो देवता वरुण देव थे।

पिता चेलाराम जी ने 8–9 वर्ष की अवस्था में पढ़ने के लिए पाठशाला भेजा – पहले दिन अध्यापक ने पट्टी पर अक्षर लिखकर दिए।

स्वामी जी पट्टी लेकर एकान्त स्थान में जाकर ध्यान करने लगे –

दूसरे दिन पाठशाला से फिर एकान्त स्थान में चले गए कुछ बच्चे भी उनके साथ आ गए – उन्हें भजन बनाकर सुनाया।

''पढ़ो अखरू सो हिकड़ो प्यारे, जहिंमां ही जिन्सारू थ्यो !!टेक!!

बंगुला माड़ियूं बाग बगीचा, सारो ही सन्सारु थियो ।।१।।

तीसरे दिन भी पाठशाला से चले गए—सारा दिन सारी रात जंगल में एकान्त स्थान में बैठकर ध्यान करते रहे – दूसरे दिन ढूंढते ढूंढते भक्त चेलाराम जी ने उन्हें एकान्त वन प्रदेश में ध्यान मग्न बैठे देखा।

भक्त जी उन्हें घर लाए—माता भाव विह्वल हो उन्हें पास में बिठाकर समझाने लगी कि तुमने कल से कुछ खाया पिया नहीं है—तुम कल से कहां थे—पर स्वामी जी ने कुछ उत्तर न दिया ।

दूसरे दिन से उन्हें घर में अभ्यागत सन्त अतिथि की सेवा में लगा दिया गया – घर के लिए कुंए से पानी भरने जाते थे गांव के अन्य स्त्री–पुरूष भी वहां पानी भरने आते थे।वे स्वामी जी को रहट चलाने के लिए कहते थे – स्वामी जी शान्तिपूर्वक तब तक रहट चलाते रहते थे जब तक सब पानी भरकर न चले जाएं उसके बाद स्वयं पानी भरकर घर आते थे ।

घर में आए सन्त महात्माओं को प्रेम पूर्वक भोजन कराते थे।

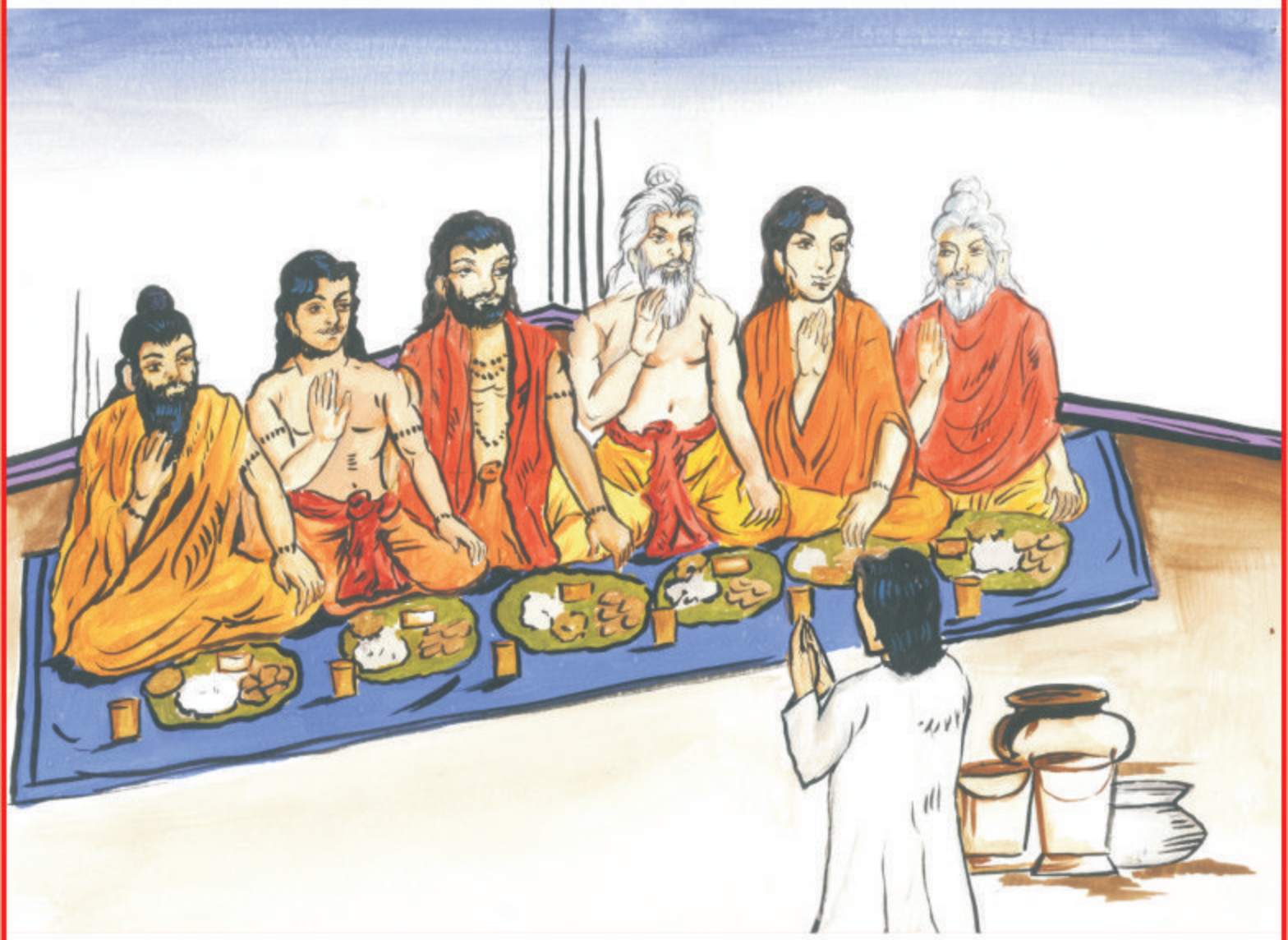

बारह वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। स्वामी जी जब 13—14 वर्ष के थे तब स्वामी आसूराम जी—खण्डू पाठशाला के प्रधानाध्यापक बनकर वहां आए वे भी प्रतिदिन भक्त चेलाराम के घर सत्संग मेंआकर सम्मिलित होने लगे एवं सत्संग में अमृतवाणी भी सुनाने लगे।
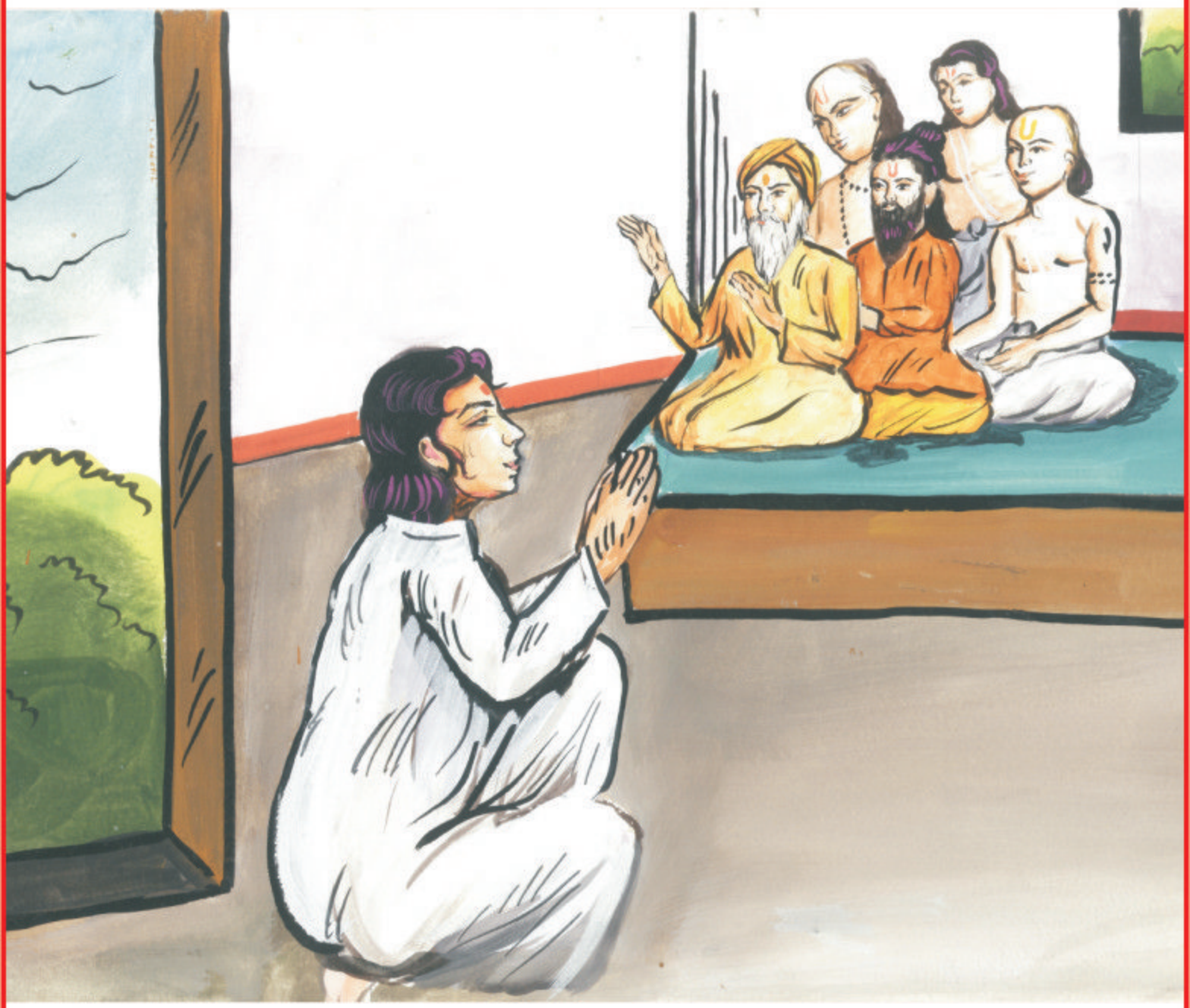
एक दिन सत्संग में सद्गुरू करने की आवश्यकता पर प्रवचन हुआ। बिना गुरू के ज्ञान एवं आत्म साक्षात्कार नहीं होता – सत्संग के पश्चात् स्वामी जी ने स्वामी आसूराम जी से नाम दीक्षा देने की प्रार्थना की